मसखरी हैस्टर

लेखन व चित्रः बैन शैक्टर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मसखरी हैस्टर

लेखन व चित्रः बैन शैक्टर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

अध्याय 1

हैस्टर के पिता एक मसखरे थे।

वे नाचते थे।

वे गाते थे।

और पहेलियाँ बूझते थे।

वे अजीबो-गरीब चेहरे बनाते थे।

हैस्टर ने कहा,

"मैं भी एक मसखरा बनना चाहती हूँ।"

उसकी माँ ने कहा, ‘‘नहीं!’’

उसके पिता ने कहा, ‘‘नहीं! नहीं!’’

हैस्टर ने कहा, ‘‘हाँ, हाँ, हाँ!’’

हैस्टर अपने कमरे में,

नाचती,

गाती,

पहेलियाँ बूझती,

और अजीबो-गरीब चेहरे बनाती।

हैस्टर की माँ ने उसे

यह सब करते पकड़ा।

उसने कहा,

''ये नाच,

ये गाने,

ये पहेलियाँ,

और अजीबो-गरीब चेहरे बनाना, बन्द करो।''

हैस्टर ने पूछा, ''भला क्यों?''

माँ बोली,

''लड़कियाँ मसखरा नहीं बन सकतीं।''
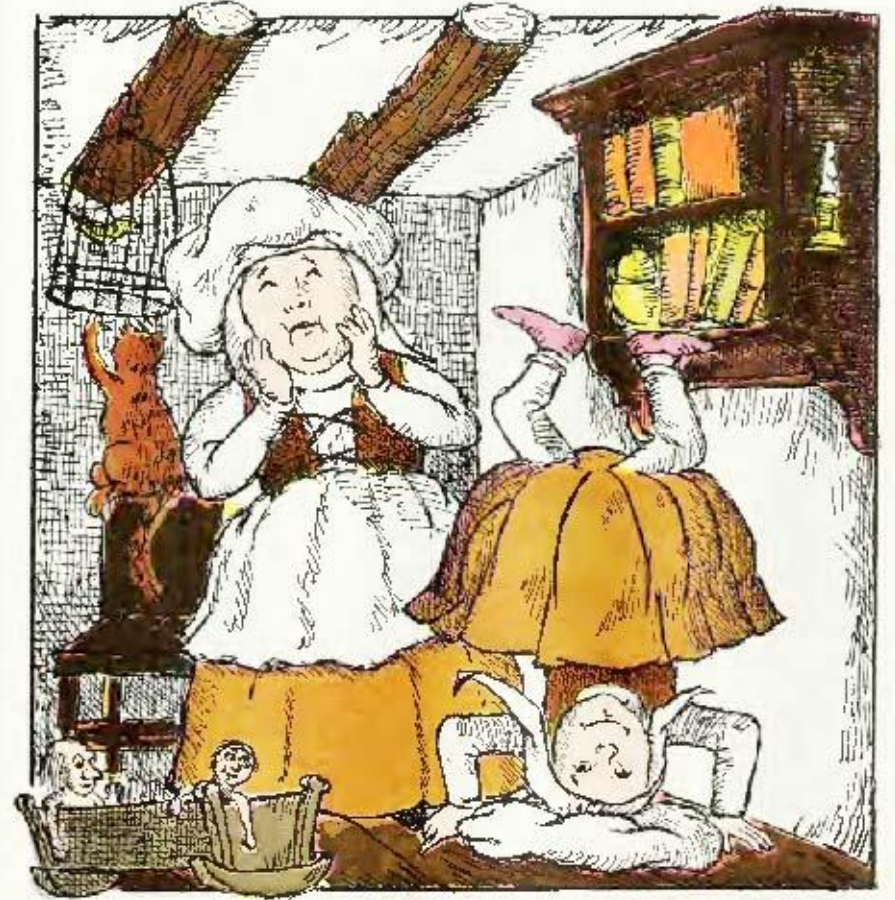
''पर मैं मसखरा बनना चाहती हूँ,

अपने पिता की तरह,'' हैस्टर ने कहा।

अध्याय 2

राजा उदास था।

उसने मसखरे को बुलवाया।

''मसखरा मुझे हंसाता है!''

राजा ने कहा।

मसखरा नाचा, गाया,

उसने पहेलियाँ बूझीं,

और अजीबो-गरीब चेहरे बनाए।

पर राजा को हंसी न आई।

''चलो, भागो यहाँ से,'' वह बोला।

''मैं अब भी उदास हूँ।''
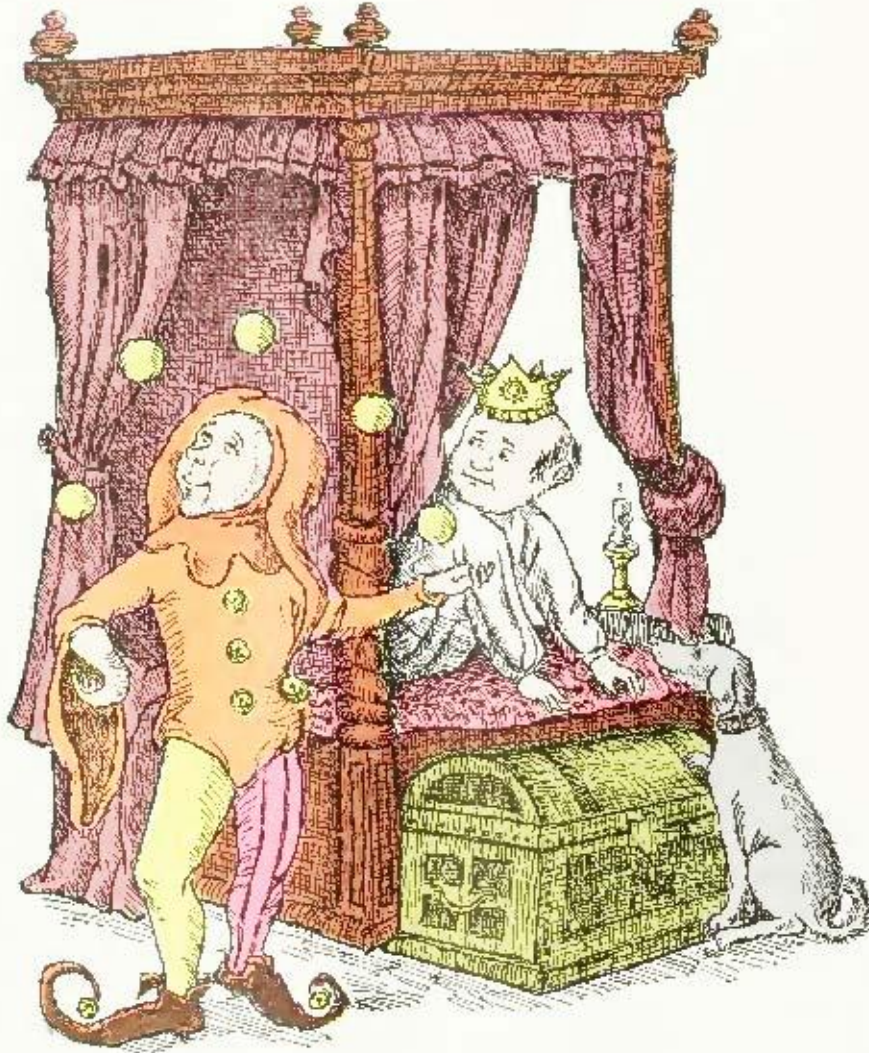
मसखरे की बीबी ने पति से पूछा,

"तुम उदास क्यों हो?"

"मैं राजा को हंसा न सका,"

मसखरे ने कहा।

जब हैस्टर ने पिता को उदास देखा,

वह बोली, "मैं तुम्हें हंसाऊंगी!"

वह नाची, वह गाई,

उसने पहेलियाँ बूझीं।

उसने अजीबो-गरीब चेहरे बनाए।

हैस्टर के पिता हंस पड़े।
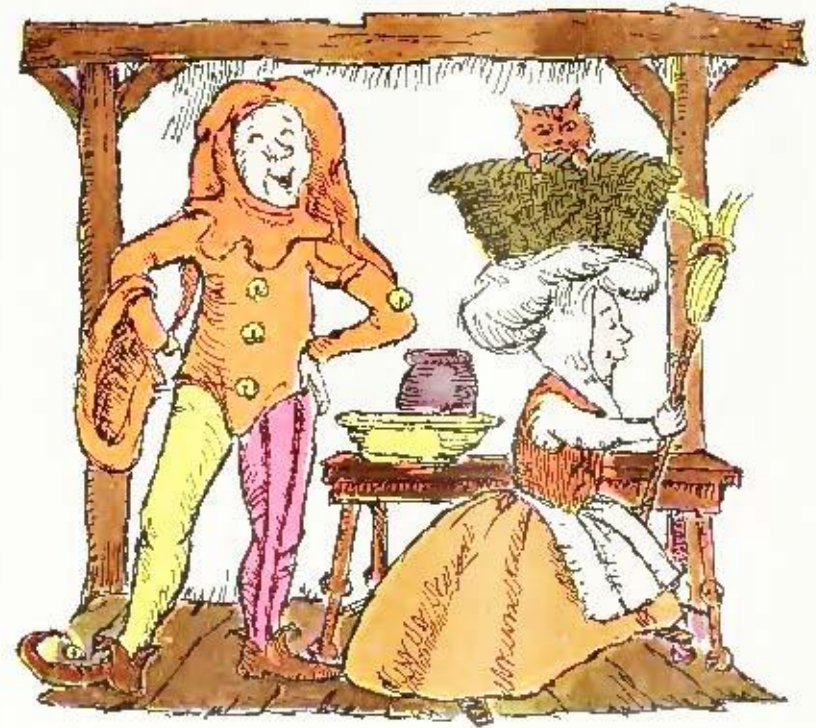
"मैं तुम्हें राजा के पास ले जाऊंगा,"

पिता ने कहा। "तुम उन्हें हंसा सकोगी।"

"एक लड़की मसखरी?"

उसकी माँ ने पिता से पूछा।
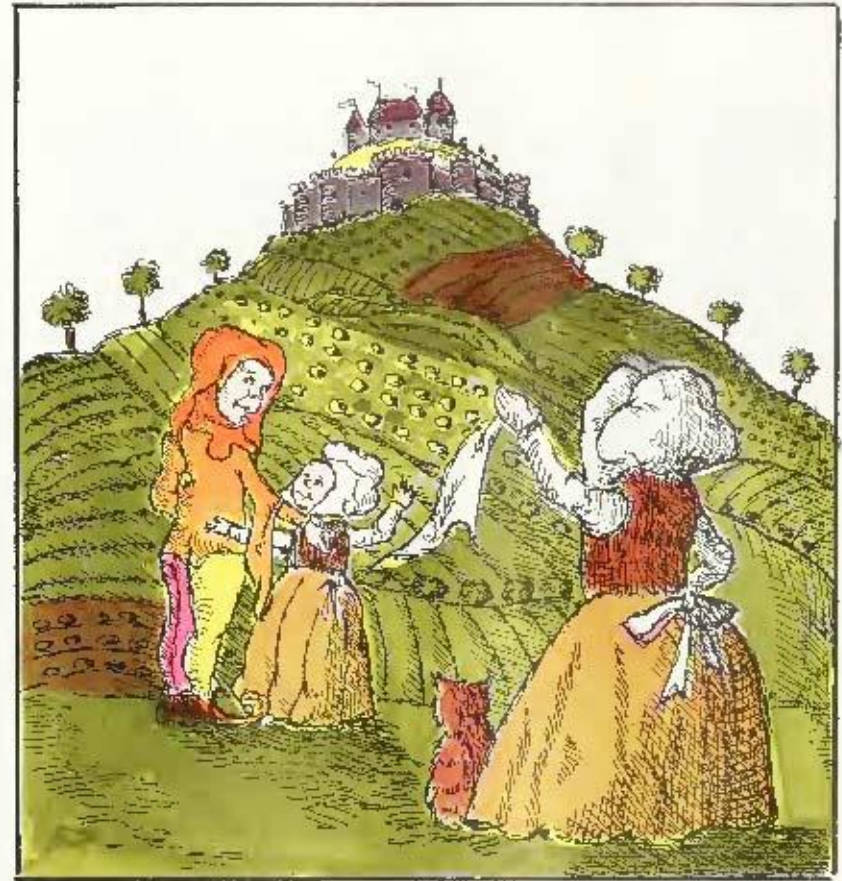
"क्यों नहीं!" हैस्टर के पिता ने कहा।

"क्यों नहीं!" हैस्टर बोली।

"क्यों नहीं?" उसकी माँ ने कहा।
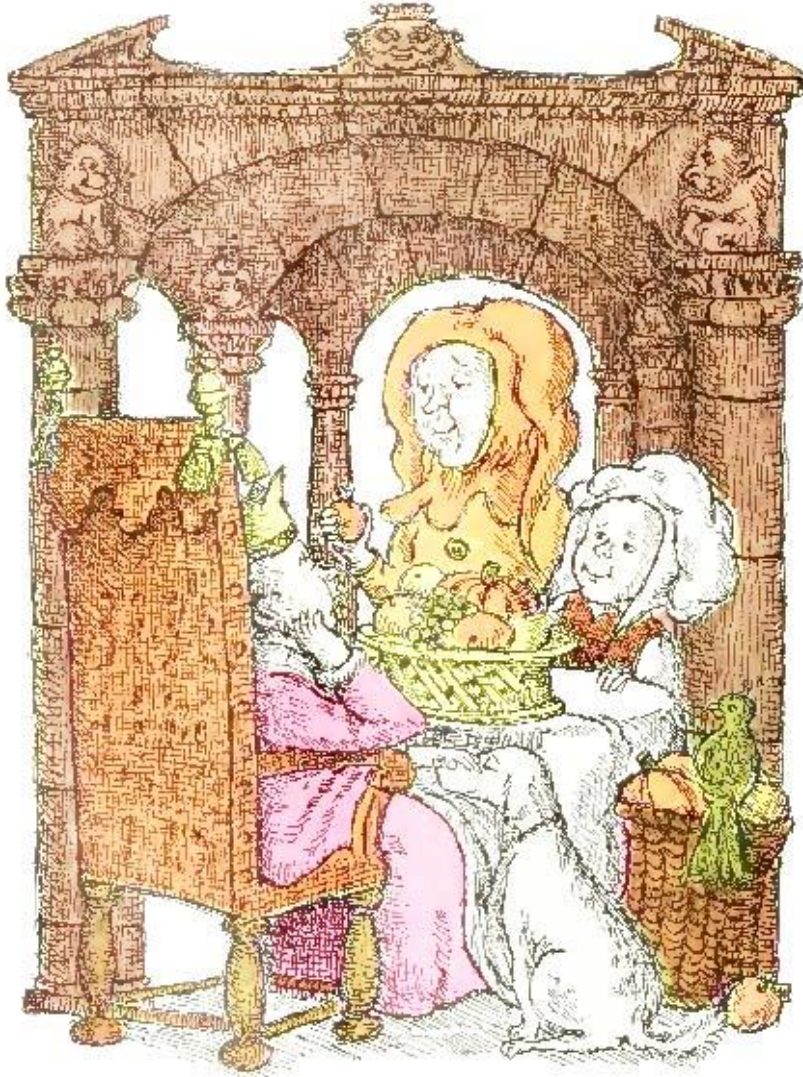
अध्याय 3

राजा अब भी उदास था।

''मेरी छोटी-सी बिटिया आपको हंसाएगी,''

मसखरे ने कहा।

''एक लड़की मसखरी?''

''क्यों नहीं!'' मसखरे ने राजा से कहा।

''क्यों नहीं!'' हैस्टर ने कहा।

''क्यों नहीं?'' राजा बोला।

हैस्टर नाची,

उसने गीत गाए

पहेलियाँ बूझीं,

और अजीबो-गरीब चेहरे बनाए।

राजा हंसा।

हैस्टर भी हंसी।

"मैं खुद को बड़ा बेवकूफ़ महसूस कर रही हूँ,"
हैस्टर ने कहा।

"क्यों भला?" राजा ने जानना चाहा।

"आपको हंसाते हुए, मैं खुद को बेवकूफ़ महसूस कर रही हूँ," हैस्टर ने कहा। "मुझे अब मसखरा नहीं बनना है।"

"तो तुम क्या बनना चाहती हो?"

"मैं कुछ अहम बनना चाहती हूँ," हैस्टर ने कहा।

"अहम?" राजा ने पूछा।

"अहम!" हैस्टर ने जवाब दिया।

"मैं एक सामंत बनना चाहती हूँ!"

"एक सामंत?" राजा ने पूछा।

"एक सामंत!" हैस्टर बोली।
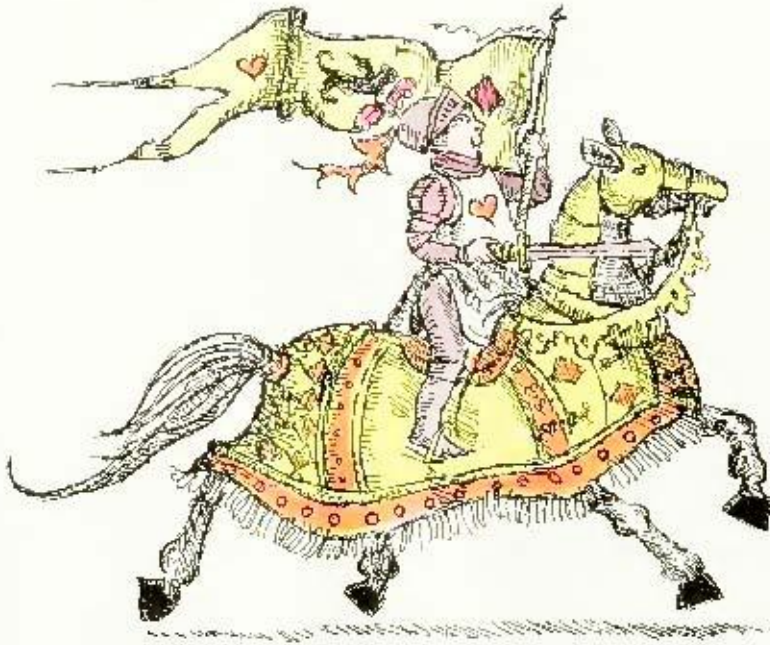
राजा ने हैस्टर को सामंत बना दिया।

उसने हैस्टर को एक घोड़ा दिया।

एक ध्वज दिया।

एक तलवार दी।

हैस्टर घोड़े पर सवार हुई।

उसने ध्वज लहराया।

हैस्टर ने राजा से पूछा,

''इस तलवार का मैं क्या करूं?''

''तलवार लड़ने के लिए है,''

राजा ने जवाब दिया।

''मैं लड़ना नहीं चाहती,'' हैस्टर बोली।

''पर सामंत तो लड़ते हैं।''

"पर मुझे लड़ना नहीं है,"

हैस्टर ने कहा।

"मुझे अब सामन्त नहीं बनना।"

"तो तुम क्या बनना चाहती हो?"

"मैं कुछ और आला-अहम बनना चाहती हूँ!"

हैस्टर ने कहा।

"और आला-अहम?" राजा ने पूछा।

"मैं राजा बनाना चाहती हूँ।"

"राजा?" राजा ने पूछा।

"हाँ, राजा!" हैस्टर ने कहा।

"तो तुम अब राजा हो!" राजा ने ऐलान किया।

"राजा करता क्या है?"

हैस्टर ने पूछा।
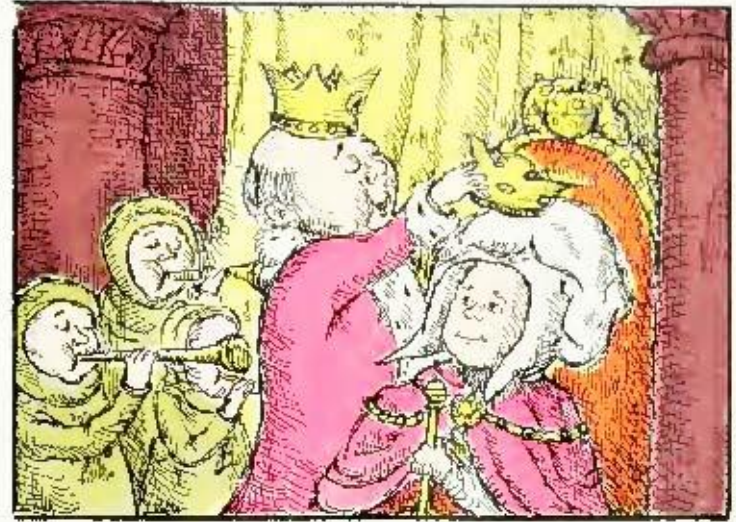
"राजा को लोगों की बात सुननी होती है,"

राजा ने कहा।

"और सलाह देनी होती है।"

"मैं सुनूंगी!" हैस्टर बोली।

"और सलाह भी दूंगी।"

लोग आए,

आस-पास से और दूर-दराज़ से भी।

एक किसान,

एक ग्वाला,

एक शिकारी

और माँ।
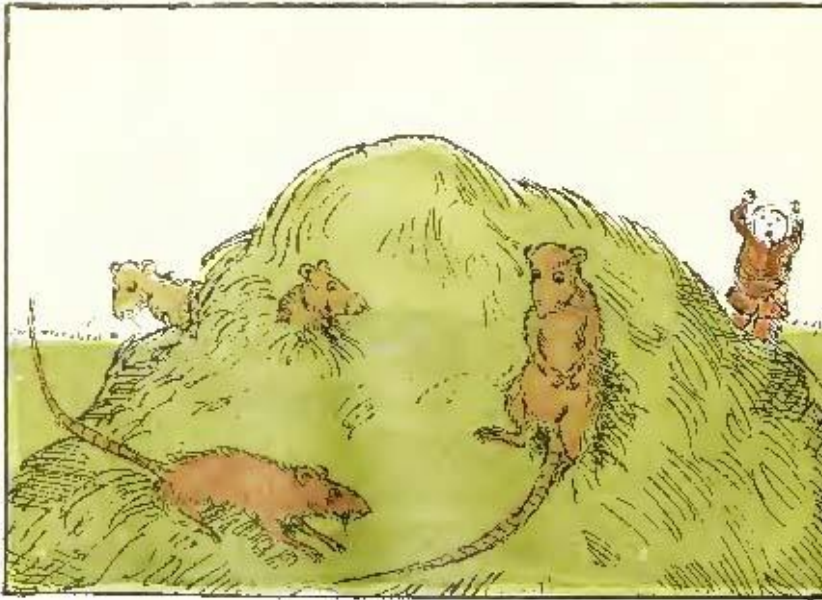
किसान ने कहा,

''मेरी बिल्ली गई भाग है,

और पुआल में घुस आए हैं चूहे।''

''चूहों को वहीं रहने दो,'' हैस्टर ने कहा।

''क्या बेवकूफी भरी सलाह है!''

किसान बड़बड़ाया।

ग्वाले ने कहा,

''मेरी गाय का दूध चुका है सूख,

रोते मेरे बच्चे ज़ार-ज़ार।''

''उन्हें खिलाओ सेब की मिठाई,''

हैस्टर ने कहा।

''क्या बेवकूफी भरी सलाह है,'' ग्वाले ने कहा।
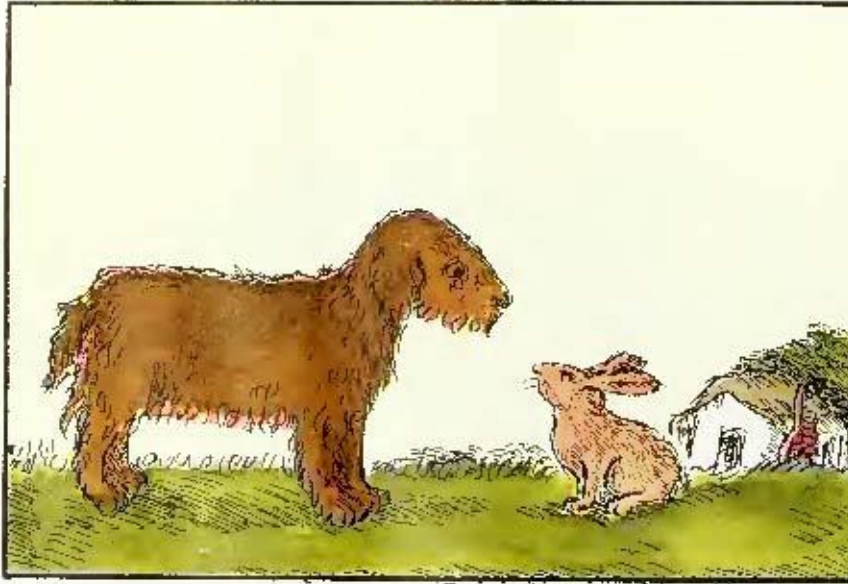
शिकारी ने कहा,

“मेरा कुत्ता है बीमार,

सकता वह नहीं तेज़ दौड़।”

“ले आओ फिर एक शिकारी बिल्ली,”

हैस्टर ने सलाह दी।

“सलाह बेवकूफी भरी है,” शिकारी ने कहा।

माँ ने कहा,

“मेरी नन्ही बनी है राजा,

भला सुनी किसी ने ऐसी बात कभी!”

माँ बड़ी उदास थी।
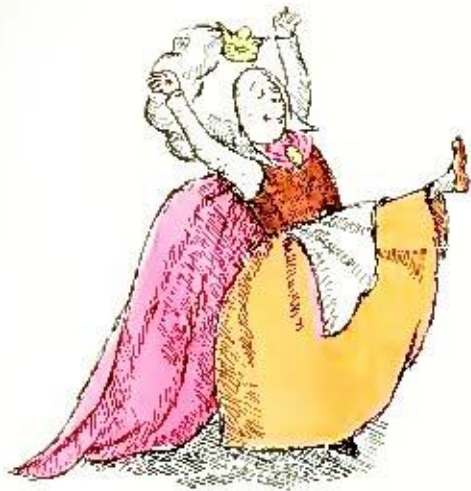
हैस्टर नाची,

वह गाई,

उसने पहेलियाँ बूझीं,

उसने अजीबो-गरीब चेहरे बनाए।

उसने माँ को हंसा दिया।

''मैं फिर से तुम्हारी नन्ही बिटिया बनना चाहती हूँ,''

हैस्टर ने कहा।

“बढ़िया!” उसकी माँ ने कहा।

“बढ़िया!” उसके पिता ने कहा।

“बहुत ही बढ़िया!” राजा ने कहा।

“मैं ठीक अपने पिता की तरह मसखरा बनना चाहती हूँ,” हैस्टर ने कहा। “मैं नाच सकती हूँ, गा सकती हूँ, पहेलियाँ बुझ सकती हूँ और अजीबो-गरीब चेहरे भी बना सकती हूँ।” पर हैस्टर की माँ ने कहा, “नहीं!” उसके पिता ने कहा, “नहीं!” तब हैस्टर ने कहा, “हाँ! हाँ! हाँ!”